ROOTINDEXING
JOURNAL ABSTRACTING AND INDEXING SERVICE
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in December 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

दिव्यांग विद्यार्थियों के उन्नयन हेतु सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के प्रति विशिष्ट बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता का अध्ययन

रीना राठौड़, शोधार्थी, अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर
डॉ. पूनम मिश्रा, शोध पर्यवेक्षक, अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का उधेश्य दिव्यांग विद्यार्थियों के उन्नयन हेतु सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के प्रति विशिष्ट बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता का अध्ययन करना था। इस हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में कोटा संभाग के विशिष्ट शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत् 400 विशिष्ट बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को अध्ययन के न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। शोध उपकरण के लिए स्वनिर्मित जागरूकता मापनी का निर्माण किया गया। प्रदत्तों को विश्लेषित करने के लिए मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया। आंकड़ों का विश्लेषण करने के उपरांत निष्कर्ष में पाया कि दिव्यांग विद्यार्थियों के उन्नयन हेतु सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के प्रति विशिष्ट बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में क्षेत्रियता के संदर्भ में एवं लैंगिक विभिन्नता के संदर्भ में सार्थक अंतर है।

मुख्य शब्द :- दिव्यांग विद्यार्थी, विशिष्ट बी.एड. प्रशिक्षणार्थी एवं जागरूकता।

प्रस्तावना

आज समाज में शारीरिक अक्षम व्यक्तियों ने अपनी क्षमताओं व प्रतिभाओं के प्रदर्शन से अपना एक यथोचित स्थान बना लिया है। शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति का मौलिक अधिकार है। सभी के लिए शिक्षा के अंतर्गत शारीरिक रूप से दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। शोध व अनुभव द्वारा यह स्पष्ट हो गया है कि शारीरिक अक्षम व्यक्तियों की समाज के साथ सभी स्तरों पर भागीदारी ही उन्हें जीवन के संघर्षों के लिए तैयार कर सकती है। समान व्यवहार व समान सहभागिता ही उनमें आत्म-विश्वास विकसित कर समाज में गर्व के साथ जीने का साहस दे सकती है। भारत सरकार ने सभी के लिए शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक वर्ग के बच्चों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया है। वर्तमान विश्व में कुल जनसंख्या के लगभग 10 प्रतिशत अर्थात 5 करोड़ लोग शारीरिक या मानसिक रूप से पूरे विश्व मे अक्षम हैं। विकसित और विकासशील देशों में लगभग 3.50 करोड़ विकलांग पहुंच से बाहर तथा किसी प्रकार की सहायता प्राप्त करने से वंचित है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 1981 को वर्ष अंन्तराष्ट्रीय विकलांगता वर्ष के रूप में घोषित किया गया। 1986 एवं 1992 की शिक्षा नीतियों में बालकों के स्वास्थ्य, शिक्षा एंव सामाजिक कल्याण के लिए अनेक कार्यक्रमों का सुझाव दिया जिसके द्वारा विकलांगता को रोकने का प्रयास किया गया। हमारे समाज का नैतिक उत्तरदायित्व होना चाहिए कि हम व्यक्तिगत स्तर पर इन बालकों के लिए योजनाओं का क्रियान्यवन एवं शिक्षा के लिए विभिन्न प्रावधानों का आयोजन करें।

अध्ययन का औचित्य

समाज में विशिष्ट बालको की शिक्षा वर्तमान में एक समस्या है इस समस्या के समाधान के लिए मनोवैज्ञानिक भी सतत् प्रयत्नशील है। कुछ वर्षों के पूर्व विशिष्ट बालकों को न तो पर्याप्त सम्मान मिल पा रहा था और न ही उनकी शिक्षा की कोई अच्छी व्यवस्था थी परन्तु अब राज्य सरकार द्वारा विशिष्ट बालकों की दशा को सुधारने तथा समाज में सम्मान दिलाने के लिए शिक्षा के माध्यम से काफी प्रयास किये जा रहे है जिसके फलस्वरूप शैक्षिक परिवर्तन ने शैक्षिक समस्याओं, नवीन ज्ञान एवं शैक्षिक तकनीक के माध्यम से शैक्षिक प्रगति ने विशिष्टीकरण की मांग को जन्म दिया है, अतः विशिष्ट बच्चों के लिए प्रदान किया जा रहा है। विशिष्ट बालकों की शिक्षा के प्रति आज विश्व समुदाय जागृत हो चुका है। भारतीय सरकार दिव्यांग बालकों के विकास हेतु कई नीतियां लाती रही है चाहे वह केंद्रीय स्तर पर हो या फिर क्षेत्रीय स्तर पर। परन्तु वर्तमान समय में इन बालकों कई व्यक्तिगत समस्याओं का विभिन्न स्तरों पर सामना करना पड़ रहा है। विकलांगता की समस्याओं को एवं उनके प्रकार को समझना सभी के लिए अति आवश्यक हो गया है। यह तभी संभव है जब विशिष्ट विशेष शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षण प्राप्त करने प्रशिक्षणार्थी दिव्यांग विद्यार्थियों की विभिन्न समस्याओं से परिचित हो तथा साथ ही उन्हें दिव्यांग विद्यार्थियों के उन्नयन हेतु सरकार द्वारा हेतु चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी हो। इसलिए प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से दिव्यांग विद्यार्थियों के उन्नयन हेतु सरकार द्वारा हेतु चलाई जा रही योजनाओं के प्रति विशिष्ट बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता का अध्ययन करने का निश्चय किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. दिव्यांग विद्यार्थियों के उन्नयन हेतु सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के प्रति ग्रामीण एवं शहरी विशिष्ट बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता का अध्ययन करना।
2. दिव्यांग विद्यार्थियों के उन्नयन हेतु सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के प्रति ग्रामीण विशिष्ट बी.एड. छात्र एवं छात्राओं प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता का अध्ययन करना।
3. दिव्यांग विद्यार्थियों के उन्नयन हेतु सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के प्रति शहरी विशिष्ट बी.एड. छात्र एवं छात्राओं प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. दिव्यांग विद्यार्थियों के उन्नयन हेतु सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के प्रति ग्रामीण एवं शहरी विशिष्ट बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
2. दिव्यांग विद्यार्थियों के उन्नयन हेतु सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के प्रति ग्रामीण विशिष्ट बी.एड. छात्र एवं छात्राओं प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
3. दिव्यांग विद्यार्थियों के उन्नयन हेतु सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के प्रति शहरी विशिष्ट बी.एड. छात्र एवं छात्राओं प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में राजस्थान राज्य के कोटा संभाग के विशिष्ट शिक्षक शिक्षा में अध्ययनरत् विशिष्ट बी.एड. प्रशिक्षणार्थी शोध की जनसंख्या हैं।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में कोटा संभाग के विशिष्ट शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययनरत् 400 विशिष्ट बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को अध्ययन के न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्वनिर्मित जागरूकता मापनी का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रदत्तों को विश्लेषित करने के लिए निम्न सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया है-

- मध्यमान
- प्रमाप विचलन
- क्रान्तिक अनुपात

आंकड़ों का विश्लेषण

परिकल्पना 1 – दिव्यांग विद्यार्थियों के उन्नयन हेतु सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के प्रति ग्रामीण एवं शहरी विशिष्ट बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

सारणी संख्या : 1

ग्रामीण एवं शहरी विशिष्ट बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में अंतर

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रांतिक अनुपात	परिणाम
ग्रामीण विशिष्ट बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों	200	65.79	13.58	2.25	0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत
शहरी विशिष्ट बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों	200	69.35	17.84		

व्याख्या –

उपर्युक्त तालिका दिव्यांग विद्यार्थियों के उन्नयन हेतु सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के प्रति ग्रामीण एवं शहरी विशिष्ट बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में सार्थक अंतर को दर्शाती है। तालिका के निरीक्षण से यह ज्ञात होता है कि ग्रामीण एवं शहरी विशिष्ट बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता का मध्यमान क्रमशः 65.79 व 69.35 और प्रमाप विचलन क्रमशः 13.58 व 17.84 प्राप्त हुआ। मध्यमान एवं प्रमाप विचलन की सहायता से क्रांतिक अनुपात की गणना करने पर मान 2.25 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता के अंश 398 एवं 0.05 सार्थकता स्तर पर तालिका के मान 1.97 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अर्थात् दिव्यांग विद्यार्थियों के उन्नयन हेतु सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के प्रति ग्रामीण एवं शहरी विशिष्ट बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में सार्थक अंतर पाया जाता है।

दण्ड आरेख : 1

ग्रामीण एवं शहरी विशिष्ट बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता के मध्यमान एवं प्रमाप विचलन

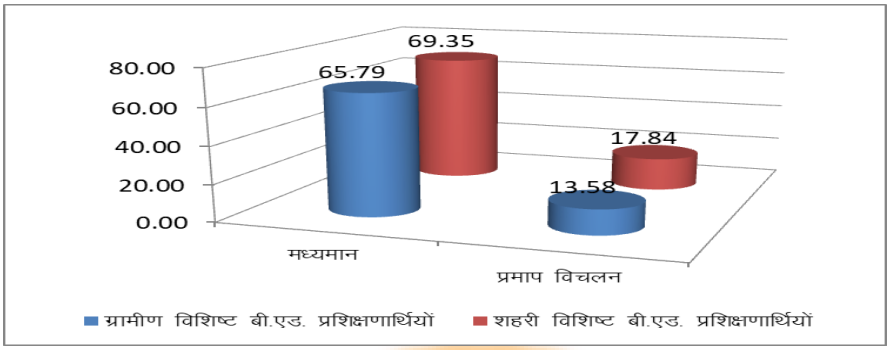

परिकल्पना 2 – दिव्यांग विद्यार्थियों के उन्नयन हेतु सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के प्रति ग्रामीण विशिष्ट बी. एड. छात्र एवं छात्राओं प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

सारणी संख्या : 2

ग्रामीण विशिष्ट बी.एड. छात्र एवं छात्राओं प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में अंतर

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रांतिक अनुपात	परिणाम
ग्रामीण विशिष्ट बी.एड. छात्र	100	62.79	14.62	2.48	0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत
ग्रामीण विशिष्ट बी.एड. छात्राएँ	100	68.35	16.97		

WIKIPEDIA The Free Encyclopedia

व्याख्या –

उपर्युक्त तालिका दिव्यांग विद्यार्थियों के उन्नयन हेतु सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के प्रति ग्रामीण विशिष्ट बी.एड. छात्र एवं छात्राओं प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में सार्थक अंतर को दर्शाती है। तालिका के निरीक्षण से यह ज्ञात होता है कि ग्रामीण विशिष्ट बी.एड. छात्र एवं छात्राओं प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता का मध्यमान क्रमशः 62.79 व 68.35 और प्रमाप विचलन क्रमशः 14.62 व 16.97 प्राप्त हुआ। मध्यमान एवं प्रमाप विचलन की सहायता से क्रांतिक अनुपात की गणना करने पर मान 2.48 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता के अंश 198 एवं 0.05 सार्थकता स्तर पर तालिका के मान 1.97 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अर्थात् दिव्यांग विद्यार्थियों के उन्नयन हेतु सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के प्रति ग्रामीण विशिष्ट बी.एड. छात्र एवं छात्राओं प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में सार्थक अंतर पाया जाता है।

दण्ड आरेख : 2

ग्रामीण विशिष्ट बी.एड. छात्र एवं छात्राओं प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता के मध्यमान एवं प्रमाप विचलन

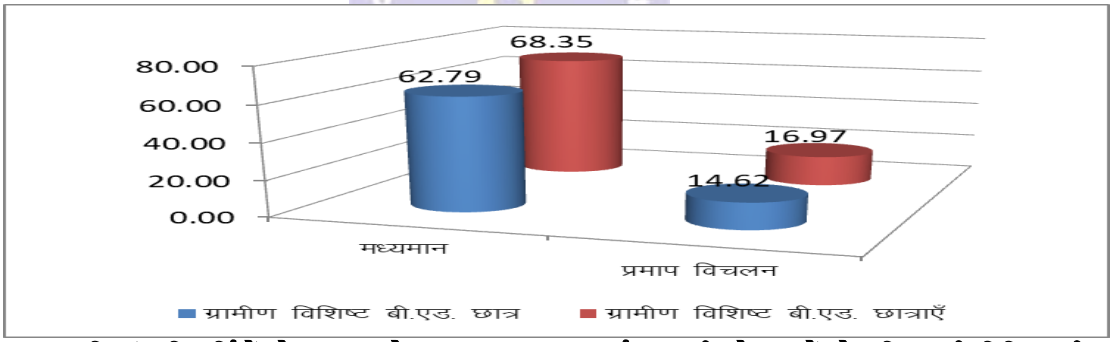

परिकल्पना 3 – दिव्यांग विद्यार्थियों के उन्नयन हेतु सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के प्रति शहरी विशिष्ट बी. एड. छात्र एवं छात्राओं प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

सारणी संख्या : 3

शहरी विशिष्ट बी.एड. छात्र एवं छात्राओं प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में अंतर

ADVANCED SCIENCES INDEX

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रांतिक अनुपात	परिणाम
शहरी विशिष्ट बी.एड. छात्र	100	64.27	15.53	2.09	0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत
शहरी विशिष्ट बी.एड. छात्राएँ	100	69.33	18.56		

व्याख्या –

उपर्युक्त तालिका दिव्यांग विद्यार्थियों के उन्नयन हेतु सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के प्रति शहरी विशिष्ट बी.एड. छात्र एवं छात्राओं प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में सार्थक अंतर को दर्शाती है। तालिका के निरीक्षण से यह ज्ञात होता है कि शहरी विशिष्ट बी.एड. छात्र एवं छात्राओं प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता का मध्यमान क्रमशः 64.27 व 69.33 और प्रमाप विचलन क्रमशः 15.53 व 18.56 प्राप्त हुआ। मध्यमान एवं प्रमाप विचलन की सहायता से क्रांतिक अनुपात की गणना करने पर मान 2.09 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता के अंश 198 एवं 0.05 सार्थकता स्तर पर तालिका के मान 1.97 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अर्थात् दिव्यांग विद्यार्थियों के उन्नयन हेतु सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के प्रति शहरी विशिष्ट बी.एड. छात्र एवं छात्राओं प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में सार्थक अंतर पाया जाता है।

दण्ड आरेख : 3

शहरी विशिष्ट बी.एड. छात्र एवं छात्राओं प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता के मध्यमान एवं प्रमाप विचलन

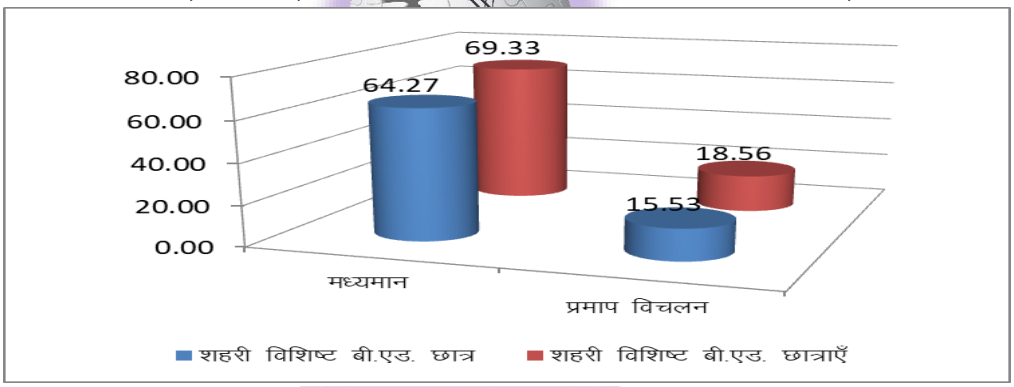

निष्कर्ष एवं सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन में निष्कर्षस्वरूप यह पाया कि दिव्यांग विद्यार्थियों के उन्नयन हेतु सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के प्रति ग्रामीण एवं शहरी विशिष्ट बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में अंतर है। शहरी विशिष्ट बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में ग्रामीण विशिष्ट बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता कम पायी गयी क्योंकि ग्रामीण क्षेत्र का वातावरण समावेशी शिक्षा के मूलभूत सिद्धांतों के अनुरूप नहीं है। यद्यपि भारत सरकार दिव्यांग जनों की शिक्षा के लिए पर्याप्त कार्य करती है, परंतु वास्तव में लाभार्थियों को उसका पूरा पूरा लाभ नहीं मिल पाता। ग्रामीण क्षेत्र में योजनाओं का सही से क्रियान्वयन सही प्रकार से नहीं हो रहा है। जिसके कारण प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता कम पायी गयी। इस आधार पर यह सुझाव दिया जाता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं और नीतियों का व्यापक प्रचार-प्रसार कर शिक्षा के प्रति जागरूकता पैदा की जानी चाहिए। विद्यालयों में पूर्णकालिक परामर्शदाताओं की नियुक्ति की जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- आस्था (2011). प्राइमरी स्कूल टीचर्स अवेयरनेस ऑन च्व् बज 1995 एण्ड इनक्लूजन ऑफ चिल्ड्रन विद स्पेशल नीड्स. *प्दजमतदंजपवदंस रवनतदंस व ि उनसजपकपेबपचसपदंतल उंदंहमउमदज ेजनकपमे* 1;1द्धए 65.70ɐ
- बंसल, स्नेहा. (2016). एटीट्यूड ऑफ टीचर्स टुवर्ड्स इंक्लूसिव एजुकेशन इन रिलेशन टु दीअर प्रोफेशनल कमिटमेन्ट. *प्दकपंद श्रवनतदंस व ि म्कनबंजपवदंस ैजनकपमे रू ।द प्दजमतकपेबपचसपदंतल श्रवनतदंस*ए 3;1द्धए 96.108ɐ
- बेहेरा, दुर्योधन. (2020). एटीट्यूड ऑफ प्री-स्कूल एंड प्राइमरी स्कूल टीचर्स टुवर्ड्स डिसेबीलिट एंड इंक्लूजन. *प्दजमतदंजपवदंस मकनबंजपवदंस रवनतदंस ब्भ्ऋ।छ*ए 1;5द्धए 159.163ɐ
- चानन, करूणा. (2014). इंक्लूसिव सैकण्डरी एजूकेशन इन इण्डियाः चेलेन्जेस एण्ड फ्यूचर डायरेक्शन. *श्रवनतदंस व ि प्दजमतदंजपवदंस बववचमतंजपवद पद मकनबंजपवद*ए 16;2द्धए 121.138ɐ
- मरिअस. (2018). पोलिसीज, प्रेक्टिसेज एण्ड एटीट्यूड टुवर्ड्स इंक्लूसिव एजूकेशनः द केस ऑफ ग्रीस. ूण्उकचपण्बवउध्रवनतदंसध्वबेबप
- नामदेव, हेमन्त. (2020). राजस्थान में प्राथमिक स्तर पर विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की समावेशी शिक्षा का अध्ययन. ूण्ैवकीहंदहंण्पदसिपइदमजण्पदंब
- पाल, डॉ सीताराम. (2020). ओपीनीयन ऑफ परसन विद डिसेबिलिटीज टुवर्ड्स द राइट ऑफ परसन विद डिसेबिलिटी एक्ट, 2016. *प्दजमतदंजपवदंस मकनबंजपवदंस रवनतदंस ब्भ्ऋ।छ*ए 1;5द्धए 103.113ɐ
- पाटगिरी, हीरामनी (2017). राइट्स टु एजुकेशन एण्ड चिल्ड्रन विद स्पेशल नीड्सः रोल ऑफ सर्व शिक्षा अभियान इन बरपेटा डिस्ट्रिक्ट ऑफ असम. *प्दजमतदंजपवदंस रवनतदंस व ि निउंदपजपमे ंदक ेवबपंस ेबपमदबमे*ए 7;1द्धए 45.53ɐ
- प्रियदर्शिनी, एस. शारदा (2017). इफेक्ट ऑफ सलेक्टेड वेरिएबल्स ऑन रेगुलर स्कूल टीचर्स एटीट्यूड टुवर्ड्स इनक्लूसिव एजुकेशन. ध् *उंदंहमतश् रवनतदंस वद मकनबंजपवदंस चेलबीवसवहल*ए 10;3द्धए 28.38ɐ
- त्रिपाठी, विवेक नाथ. (2016). उच्च शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत सामान्य विद्यार्थियों एवं विकलांग विद्यार्थियों की स्वास्थ्य के प्रति सजगता का तुलनात्मक अध्ययन. *प्दनपेपजपअम ज्मंबीमत. । च्मरत त्मअपमूमक त्मितममक त्मेमंतबी श्रवनतदंस*ए 3;2द्धए 32.43ɐ